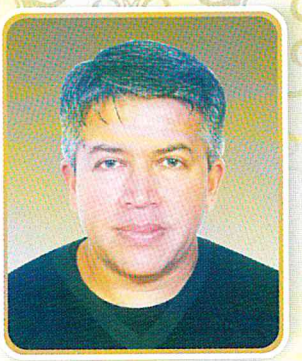


Shri Rahul Jain

Shri Rahul Jain is one of the world's leading experts of the traditional textile arts of India. Apart from his well-known scholarship and writings, Shri Jain is also India's most acclaimed design practitioner in the field of traditional brocade-weaving.

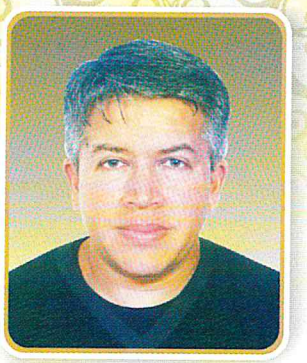
2. Born on January 4, 1963, Shri Jain has worked to promote the traditional weavers and production houses of the handloom silk industry of Varanasi. In recent years, he has turned to mentoring younger Indians in the study and appreciation of the history and practice of India's textile arts. For 20 years, he has directed the silk handloom workshop, ASHA, producing India's finest and rarest brocade textiles that have set a benchmark for contemporary Indian craftsmanship and quality.

3. Trained as an economist in the USA, Shri Jain worked with the World Bank in Washington DC before enrolling for a Master's degree programme in textile technology and weaving at the Philadelphia College of Textiles in 1990. Later, he trained and worked with several luminaries in the textile field

4. Currently, Shri Jain has been serving as an advisor to the Calico Museum of Textiles. His books researching the Calico textile collections have become a standard reference on the subject. He has also served as a textile consultant and advisor to numerous other art institutions, producing a number of other textile books and publications from the engagement. Among them are the Mehrangarh Museum Trust in Jodhpur, Jaipur City Palace Museum, Udaipur City Palace Museum, Chowmahalla Palace Trust in Hyderabad, Amr Vastra Kosh in New Delhi, Jnana Pravaha in Varanasi, the Association Pour L'Etudes et la Documentation de les Textiles d'Asie in Paris, Dar-al-Athar Islamiyya (National Museum) in Kuwait, the Nasser Khalili Collection of Islamic Art in Geneva/London, the Art Institute of Chicago, and the Doris Duke Foundation for Islamic Art in Honolulu. Shri Jain has also been a member of the All-India Handloom Board.

5. Shri Jain's first exhibition of the silk brocades woven at ASHA, titled 'Minakar', was also the first exhibition, since Independence, of contemporary handicraft-handloom products to be held at the National Museum, New Delhi. Since then, his textiles have been showcased at the Prince of Wales Museum, Mumbai; the Academy of Fine Arts, Kolkata; the British Museum, London; and the Metropolitan Museum of Art, New York, among other venues. Several have been acquired for the permanent collections of renowned international museums such as the British Museum, London; the Musee National des Arts Asiatiques, Paris; the Art Institute of Chicago; and the Textile Museum, Washington DC.

6. Shri Jain is the recipient of several academic and art scholarships in the USA. He was one of ten artists and designers selected from across the globe for the prestigious Jameel Prize 3, by the Victoria and Albert Museum, London in 2013-14.



श्री राहुल जैन

श्री राहुल जैन, भारत के पारंपरिक वस्त्र कला के क्षेत्र में विश्व के अग्रणी विशषज्ञों में से एक हैं। विद्धता और लेखन के अतिरिक्त आप पारंपरिक जरी-बुनाई के क्षेत्र में भारत के सर्वाधिक ख्यातिप्राप्त डिजाइनर हैं।

2. आपका जन्म जनवरी 4, 1963 को हुआ। आपने पारंपरिक बुनकरों तथा वाराणसी के हथकरघा रेशम उद्योग के निर्माताओं को बढ़ावा देने के लिए कार्य किया है। हाल के वर्षों में आपने भारत के इतिहास और परंपरा के अध्ययन और प्रोत्साहन हेतु युवा भारतीयों के मार्गदर्शन की ओर रुख किया है। 20 वर्षों से आप रेशम हथकरघा कार्यशाला आशा का संचालन कर रहे हैं जहां भारत के सबसे अच्छे और दुर्लभ जरी वस्त्रों का निर्माण होता है जिसने समकालीन भारतीय शिल्प और उसकी गुणवत्ता में एक नया मानदंड स्थापित किया है।

3. संयुक्त राज्य अमेरिका में अर्थशास्त्री के तौर पर प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद आपने वर्ष 1990 में फिलाडेल्फिया कॉलिज ऑव टेक्सटाइल्स में वस्त्र प्रौद्योगिकी एवं बुनाई में मास्टर डिग्री कार्यक्रम में शामिल होने के पूर्व वाशिंगटन डीसी में विश्व बैंक में काम किया। बाद में आपने वस्त्रों के क्षेत्र में अनेक लब्धप्रतिष्ठित लोगों से प्रशिक्षण प्राप्त किया और उनके साथ कार्य किया।

4. सम्प्रति, आप कैलिको म्यूजियम ऑफ टेक्सटाइल्स के सलाहकार के पद पर कार्यरत हैं। कैलिको टेक्सटाइल्स संग्रह के अनुसंधान से संबंधित आपकी पुस्तकें इस विषय पर संदर्भ-ग्रंथ बन गई हैं। आपने अनेक अन्य कला संस्थानों में वस्त्र परामर्शदाता और सलाहकार के रूप में काम किया है तथा काम के सिलसिले में अनेक अन्य वस्त्र संबंधी पुस्तकों और प्रकाशनों का सृजन-कार्य किया है। इनमें जोधपुर में मेहरनगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, जयपुर सिटी पैलेस म्यूजियम, उदयपुर सिटी पैलेस म्यूजियम, चौमहल्ला पैलेस ट्रस्ट, हैदराबाद, दिल्ली में अरम वस्त्र कोष, वाराणसी में ज्ञान प्रवाह, पेरिस में एसोसिएशन पोअर ले इटुडेज एट ला डाक्युमेंटेशन डी लेस टेक्सटाइल्स डी एशिया, कुवैत में दार-अल-अथर इस्लामिया (राष्ट्रीय संग्रहालय), जेनेवा/लंदन में नसीर खलीली कलेक्शन ऑफ इस्लामिक आर्ट, शिकागो कला संस्थान तथा होनोलुलु में डोरिस ड्यूक फाउंडेशन फॉर इस्लामिक आर्ट शामिल हैं। आप अखिल भारतीय हथकरघा बोर्ड के सदस्य भी रहे हैं।

6. 'आशा' में रेशम जरी बुनाई की 'मीनाकर' नामक आपकी पहली प्रदर्शनी, स्वतंत्रता के बाद से राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में आयोजित होने वाली समकालीन हस्तशिल्प-हथकरघा उत्पादों की पहली प्रदर्शनी भी थी। तब से आपके वस्त्रों का प्रदर्शन अन्य स्थानों के साथ-साथ प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम, मुम्बई, ललित कला अकादमी, कोलकाता, ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन तथा मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट, न्यूयार्क में किया गया है। इनमें से कई प्रख्यात अंतरराष्ट्रीय संग्रहालयों जैसे ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन, दि म्यूसे नेशनल दिस आर्ट एशियाटिक्स, पेरिस, शिकागो कला संस्थान तथा वस्त्र संग्रहालय, वाशिंगटन डी.सी. द्वारा उनके स्थायी संग्रहों में शामिल कर लिए गए हैं।

6. आपको संयुक्त राज्य अमेरिका में अनेक शैक्षणिक और कला छात्रवृत्तियां प्राप्त हुई हैं। आप वर्ष 2013-14 में विक्टोरिया एंड अल्बर्ट म्यूजियम, लंदन द्वारा प्रतिष्ठित जमील प्राइज़ 3 के लिए पूरे विश्व से चुने दस कलाकारों और डिजाइनरों में से एक थे।